International Journal of Sanskrit Research 2020; 6(1): 82-84

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2020; 6(1): 82-84
© 2020 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 19-11-2019
Accepted: 23-12-2019

अंजलि
शोधच्छात्रा, पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़, पंजाब, भारत।

Corresponding Author:
अंजलि
शोधच्छात्रा, पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़, पंजाब, भारत।

ऋषि–ऋषिपरम्परा एवं मन्त्रों के साथ सम्बन्ध

अंजलि

प्रस्तावना

वेदों की अनुक्रमणियों में सूक्तों से पूर्व तत्सम्बद्ध ऋषियों का नामोल्लेख है। वेदों का काल व अर्थ समुचित रूप से जानने के लिए ऋषियों का ज्ञान परमावश्यक है। ऋषि मन्त्रकर्ता थे या मन्त्रद्रष्टा इस विषय में भारतीय तथा पाश्चात्य विद्वानो में विभिन्न मतभेद हैं। इनमें से कुछ ऋषियों को वेदों का रचयिता व अन्य वेदों का अर्थ वा ज्ञान प्राप्त करने वाले मन्त्रद्रष्टा मानते हैं। इसके अतिरिक्त कुछ विद्वान् ऋषिनामों का यौगिक अर्थ करके उन्हें तत्तद्गुणविशिष्टव्यक्ति सिद्ध करते हैं। अस्तु, प्राचीन भाष्यकार ऋषि शब्द का अर्थ वेद भी करते आये है। यथाः–

भोजराजकृत उणादिसूत्र की वृत्ति में दण्डनाथ नारायण ने ऋषि शब्द का अर्थ वेद किया ह[1]। हरदत्तमिश्र ने पाणिनीय सूत्र की व्याख्या में ब्राह्मण ग्रन्थ का उद्धरण देते हुए ऋषि शब्द का अर्थ वेद किया है [2]। इसके अतिरिक्त अनेक कोशों में भी वेद के लिए ऋषि शब्द का प्रयोग किया गया, इनमें यादवप्रकाश का वैजयन्तिकोश तथा शाश्वत कोश प्रमुख हैं [3]।

ऋषियों को मन्त्रकर्त्ता मानने वाले सर्वप्रथम ऋग्वेद का उद्धरण देते हैं :– "ऋषे मन्त्रकृतां स्तोमैः कश्यपोद्वर्धयन्गिरः [4]"।

तैत्तिरीय आरण्यक में ऋषि का मन्त्रकर्त्ता व मन्त्रपति रूप मे स्तवन किया गया है – " नम ऋषिभ्यो मन्त्रकृद्भ्यो मन्त्रपतिभ्यो मा मामृषयो मन्त्रकृतो मन्त्रपतयः परादुर्माहमृषीन् मन्त्रकृतो मन्त्रपतीन् परादाम्"[5]। इसके अतिरिक्त ताण्ड्यब्राह्मण [6], ऐतरेय ब्राह्मण [7], आपस्तम्ब श्रौतसूत्र [8], सत्याषाढ श्रौतसूत्र [9], खादिर गृह्यसूत्र [10] आदि अनेक ग्रन्थों के उदाहरणों में ऋषियों को 'मन्त्रकृत्' शब्द से विभूषित किया गया हैं। इन्हीं ग्रन्थों के उद्धरणों के आधार पर मैक्डानल व कीथ ने लिखा है – mantra kṛt in the Ṛigveda and Brāhmaṇas denotes as a "maker of mantras" [11] किन्तु इन सभी ग्रन्थों के निर्माण से पूर्व वा ऋषियों से पूर्व वेदमन्त्रों का प्रादुर्भाव हो चुका था। 'मन्त्रकृत्' शब्द का अर्थ ध्यातव्य है, सायणाचार्य ने तैत्तिरीयारण्यक के उद्धरण "नम ऋषिभ्यः• का अर्थ इस प्रकार किया है :– "मन्त्रकृद्भ्यः मन्त्रं कुर्वन्तीति मन्त्रकृतः यद्यप्यपौरूषेये वेदे कर्त्तारो न सन्ति तथापि कल्पादा वीश्वरानुग्रहेण मन्त्राणां लब्धारो मन्त्रकृत् इत्युच्यन्ते" [12] इससे सभी ऋषियों के कल्पादि में होने का दोष हुआ। वस्तुतः मन्त्रकृत् शब्द का समानार्थक शब्द मन्त्रकार है इस शब्द का प्रयोग भी मानव गृह्यसूत्र में ऋषि के लिये आया है [13]। मन्त्रकृत् तथा मन्त्रकार शब्द की प्रवृत्ति वेद से लेकर गृह्यसूत्रों के काल तक एकार्थ में हुई। भट्ट भास्कर तैत्तिरीयारण्यक के उक्त मन्त्र में गृहीत मन्त्रकृत् शब्द का विशद विवेचन इस प्रकार करते हैं:–

"अथ नम ऋषिभ्यः द्रष्टभ्यः मन्त्रकृद्भ्यः मन्त्राणां द्रष्टभ्यः। दर्शनमेव कर्तत्वं कुर्तरस्मरणात्" [14]।

इस प्रकार मन्त्रों वा मन्त्रार्थों के ज्ञान देने वाले, मन्त्रों के विनियोग के ज्ञापक, यज्ञादि में मन्त्रों के प्रयोजन के निर्देशक वा प्राचीन मन्त्रों के अप्रचलित नवीन वा विशेष भाव को बताने वाले ऋषि शब्द से बोध्य है न कि वेदों के निर्माता।

पंच ऋषिप्रकार_– जिन ऋषियों को मन्त्र प्रादुर्भूत हुए वे पाँच प्रकार के हैं। जो कि महर्षि – ऋषि – ऋषीक – ऋषिपुत्रक – श्रुतर्षि हैं। चरकतन्त्र की व्याख्या में भट्टार हरिचन्द्र ने मुनि के चार ही प्रकार बताये हैं तद्यथा – "मुनिनां चतुर्विधो भेदः। ऋषयः ऋषिकाः ऋषिपुत्रा महर्षयश्च" [15]। हरिचन्द्र श्रुतर्षियों को ऋषि श्रेणी में नहीं गिनते। यद्यपि पुराणों द्वारा ऋषिसम्बद्ध ज्ञान संचित रहा किन्तु पांच प्रकार के ऋषियों में से तीन प्रकार के ऋषियों का वर्णन रह गया है, शेष दो प्रकार के ऋषियों के सम्बन्ध के पाठ नष्ट हो चुके हैं। – पुराणस्थ पाठ के अनुसार सभी कालो में ऋषियों के पाँच प्रकार होने का स्पष्ट निर्देश है। तद्यथा –

अतीतानागानां च पंचधा ऋार्षकं स्मृतम्। अतस्त्वृषीणां वक्ष्यामि तत्र ऋार्षसमुद्भवम् [16]।।

पांच प्रकार के ऋषियों में सर्वप्रथम महर्षि की गणना है जोकि स्वयं ब्रह्मा के मानस पुत्र माने गये हैं इनकी संख्या दस है –

भृगुर्मरीचिरत्रिश्च ऋङ्गिराः पुलहः क्रतुः। मनुर्दक्षो वसिष्ठश्च पुलस्त्यश्चेति ते दश [17]।।
ब्रह्मणो मानसा ह्येते उद्भूताः स्वयमीश्वराः। परत्वेनर्षयो यस्मात् स्मृतास्तस्मान्महर्षयः [18] ।।

इन दस भृगु आदि महर्षियों के पुत्र ऋषि कहाते हैं जिनमें उशना काव्य, बृहस्पति, कश्यप, च्यवन, उतथ्य, वामदेव, अगस्त्य, उशिक् आदि हैं पूर्वोक्त महर्षियों के पुत्र तो हैं किन्तु इन्होनें ऋषिपद अपने तप से प्राप्त किया है।

ईश्वराणां सुता ह्येते ऋषयस्तान्निबोधत। काव्यो बृहस्पतिश्चैव कश्यपश्च्यवनस्तथा [19]।।
उतथ्यो वामदेवश्च अगस्त्यश्चौशिजस्तथा। कर्दमो विश्रवाः शक्तिर्बालखिल्यास्तथार्वतः [20]।।

ऋषीक तथा ऋषिपुत्र वस्तुतः समान ही हैं। ऋषियों की सन्तान ही ऋषीक वा ऋषिपुत्र कहलायीं। यथा –

ऋषिपुत्रानृषीकांस्तु गर्भोत्पन्नान्निबोधत। वत्सरो नग्नहूश्चैव भरद्वाजस्तथैव च [21]।।
ऋषि दीर्घतमाश्चैव बृहदुक्थः शरद्वतः। वाजश्रवाः सुवित्तश्च वश्याश्वश्च पराशरः [22]।।
दधीचः शंशयाश्चैव राजा वैश्रवणस्तथा। इत्येते ऋषिकाः प्रोक्तास्ते सत्यादृषितां गताः [23]।।

इस प्रकार तीनों प्रकार के ऋषि नाम उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट हैं ये सभी उद्धरण ब्रह्माण्ड पुराण से हैं, ब्रह्माण्ड पुराण में ऋषियों की कुल संख्या 90 हैं किन्तु मत्स्य पुराण में यह संख्या 92 हैं। जिनमे 19 भृगु, 33 आङ्गिरस, 6 काश्यप, 6 आत्रेय, 7 वासिष्ठ, 13 कौशिक, 3 आगस्त्य, 2 क्षत्रिय व 3 वैश्य हैं। वेद मन्त्र इन सभी ऋषियों से पूर्व ही विद्यमान थे। जो ऋषि अब मन्त्रों के साथ अनुक्रमणियों में स्मरण किये जाते हैं, वे बहुधा मन्त्रों के अन्तिम ऋषि हैं। मन्त्र उनसे पहले से चले आ रहे हैं। इस बात को पुष्ट करने के लिए दो प्रबल प्रमाण भी द्रष्टव्य हैं –

1. ऐतरेय ब्राह्मण 6.19 तथा गोपथ ब्राह्म्ण 6.1 में लिखा हैं कि ऋग्वेद 4.19 आदि सम्पात ऋचाओं को विश्वामित्र ने पहले देखा। तत्पश्चात् विश्वामित्र द्वारा दृष्ट इन्हीं सम्पात ऋचाओं को वामदेव ने जनसाधारण में फैला दिया। कात्यायन सर्वानुक्रमणी के अनुसार इन ऋचाओं का ऋषि वामदेव है, विश्वामित्र नहीं। ये ऋचाएँ वामदेव ऋषि से बहुत पहले विद्यमान थीं।
2. कौषीतकि ब्राह्म्ण 12.2 से कवष ऋषि का उल्लेख आरम्भ होता हैं। वहां लिखा है कि कवष ने 15 ऋचाओं वाला ऋग्वेद 10. 30 सूक्त देखा तत्पश्चात् उसने इसका यज्ञ में प्रयोग किया। कौषीतकि ब्राह्मण में पुनः लिखा है – कवषस्यैष महिमा सूक्तस्य चानुवेदिता [24]।। यहां अनुवेदिता से ज्ञात होता है कि उस सूक्त का पहले से कोई वेदिता अर्थात् द्रष्टा वा ज्ञाता विद्यमान था और कवष उसका उत्तरवर्ती जानने वाला है। अनेक स्थानों में विद् आदि धातुओं के साथ अनु का अर्थ क्रमपूर्वक या अनुक्रम से होता हैं।

इस प्रकार उपर्युक्त प्रमाणों से यह बात निश्चित हो जाती हैं कि मन्त्रों का प्रादुर्भाव बार – बार होता रहा है इसीलिए अनेक बार एक ही सूक्त के कई ऋषि होते हैं, यह गणना सौ तक भी पहुँच जाती है। यह बात सिद्ध करती हैं कि ऋषि मन्त्र बनाने वाले नहीं थे, प्रत्युत वे मन्त्र द्रष्टा थे।

मन्त्रों के प्रादुर्भाव का एक और भी गम्भीर अर्थ है। हम जानते हैं कि भिन्न – भिन्न ब्राह्मण ग्रन्थों में एक ही मन्त्र के भिन्न – भिन्न अर्थ किये गये हैं। एक ही मन्त्र का विनियोग भी कई प्रकार का मिलता है। मन्त्रार्थ की यही भिन्नता है जो एक ही मन्त्र में समय – समय पर अनेक ऋषियों को सूझी। इस विषय में निम्न प्रमाण भी विचार के योग्य हैं –

- आचार्य यास्क लिखते हैं – न ह्येषु प्रत्यक्षमनृषेरतपसो वा [25]

अर्थात् इन मन्त्रों में अनृषि और तपशून्य का प्रत्यक्ष नहीं होता। अब संस्कृत भाषा के मर्म को समझने वाले सहज ही इसका अनुमान लगा सकते हैं कि इससे अभिप्राय हैं मन्त्र बहुधा विद्यमान होते हैं और उन्हीं मन्त्रों मे ऋषियों का प्रत्यक्ष होता है जैसे सेब फल को पेड से नीचे गिरते हुए सभी देखते होगें या वह सदैव से ही गिरता हैं किन्तु न्यूटन की दृष्टि खुलने के बाद ही गुरूत्वाकर्षण के सिद्धात का जन्म हुआ।

उपरोक्त वचन के आगे निरूक्तकार लिखते हैं " मनुष्या वा ऋषिषूत्क्रमात्सु देवानब्रुवन्। को न ऋषिर्भविष्यतीति। तेभ्य एतं तर्कमृषिं प्रायच्छन्। मन्त्रार्थचिन्ताभ्यूहमभ्यूलहम्। तस्माद्यदेव किंचानूचानोऽभ्यूहत्यार्थं तद्भवति [26]।

इस वचन का यही अभिप्राय है कि ऋषियों को बहुधा मन्त्रार्थ ही सूझता था। वेंकटमाधव ने अपने ऋग्भाष्य की अनुक्रमणी में लिखा है कि निरूक्त का यह पाठ किसी प्राचीन ब्राह्मण ग्रंथ का पाठ है जिससे यही स्पष्ट होता है कि ब्राह्मण ग्रंथो मे भी ऋषि बहुधा मन्त्रार्थद्रष्टा ही माने गये हैं। यास्क के एषु प्रत्यक्षम् पद से निरूक्त 7.3 मे आए हुए ऋषीणां मन्त्रदृष्टयः का भी सप्तमीपरक ही अर्थ होगा। अर्थात् उपस्थित मन्त्रों मे ही ऋषियों की दृष्टियॉ होती थी।

- निरूक्त मे अन्यत्र आचार्य यास्क लिखते हैं " ऋषेर्दृष्टार्थस्य प्रीतिर्भवत्याख्यानसयुंक्ता [27]। यहां दृष्टार्थ शब्द विचार्य है क्योंकि अर्थ का अभिप्राय मन्त्र भी हो सकता है और मन्त्रार्थ भी, जिससे हमारा प्रस्तुत प्रयोजन ही सिद्ध होता है।
- वात्स्यायन मुनि न्यायसूत्र के भाष्य में किसी अन्य ब्राह्मण ग्रन्थ का प्रमाण देकर लिखते हैं –

य एव मन्त्रब्राह्मणस्य द्रष्टारः प्रव्क्तारश्च ते खल्वितिहासपुराणस्य धर्मशास्त्रस्य चेति [28]। पुनः अन्य सूत्र की व्याख्या मे लिखते हैं – य एवाप्ता वेदार्थानां द्रष्टारः प्रवक्तारश्च त एवायुर्वेदप्रभृतीनामिति [29]। इन दोनों वचनों से स्पष्ट है कि आप्त = साक्षत्कृतधर्मा लोग वेदार्थ के द्रष्टा भी थे।

- आचार्य उवट अपनें यजुर्वेद भाष्य के एक मन्त्र में ऋषिपद के व्याख्यान में लिखते हैं – 'ऋषिर्मन्त्राणां व्याख्याता' [30]। अर्थात ऋषि मन्त्रों के व्याख्याता हैं।
- बौधायन धर्मसूत्र में ऋषिपद की व्याख्या में गोविन्द स्वामी लिखते हैं –' ऋषिर्मन्त्रार्थज्ञः' [31]। अर्थात् ऋषि मन्त्रार्थ को जानने वाला होता है।
- मनुस्मृति के महर्षयः पद कें भाष्य में मेधातिथि लिखते हैं – ऋषिर्वेदः। तदध्ययन – विज्ञान – तदर्थानुष्ठानातिशययोगात् पुरूषेऽप्यृषिशब्दः [32]। अर्थात् वेद के अध्ययन विज्ञान, अर्थानुष्ठान आदि के कारण पुरूष में भी ऋषि शब्द का प्रयोग होता है।

इस प्रकार उपर्युक्त समस्त विवरण एवं विविध शास्त्रों के प्रमाणों से ज्ञात होता है कि ऋषियों एवं तत्सम्बद्ध मन्त्रों में घनिष्ठ सम्बन्ध है क्योंकि उन्होंने ही तत्तत् मन्त्र के भाव – अर्थ प्रयोजन को प्रतिजन तक पहुंचाया। उनके ही परमतप का परिपाक है जो वेद अपने समुचित रूप में हमारे पास हैं। ब्रह्माण्ड पुराण में वर्णित है–

ऋषीणां तप्यतामुग्रं तपः परमदुष्करम्।
मन्त्राः प्रादुर्बभूवुर्हि पूर्वमन्वन्तरेष्विह [33] ।।

संदर्भ

1. ऋषिः वेदः, उणादिसूत्रवृत्ति (02. 01. 159)
2. तदुक्तमृषिणा इत्यादौ दर्शनात् (तै. आ.), ऋषिर्वेदः, पाणिनीयसूत्र पदमंजरी व्याख्या (01. 01. 18)
3. ऋषिर्वेदे, शाश्वतकोश (श्लोक 719)
4. ऋग्वेद (09. 114. 02)
5. तैत्तिरीयारण्यक (04. 01. 01)
6. शिशुर्वा आंगिरसो मन्त्रकृतां मन्त्रकृदासीत्। सपितृन् पुत्रका इत्यामन्त्रयत वही• (13. 03. 24)
7. देवां ह वै सर्वचरौ सत्रं निषेदुः । ते ह पाप्मानं नापजघ्निरे तान्होवाचार्बुदः काद्रवेयः सर्वऋषिर्मन्त्रकृत्।। वही• (06. 01)
8. मन्त्रकृतो वृणीते। ' यथर्षि मन्त्रकृतो वृणीत '– इति विज्ञायते।। वही• (24. 05 .06)
9. इत ऊर्द्धवान्मन्त्रकृतोऽध्वर्यु वृणीते। " यथर्षि मन्त्रकृतो वृणीत " इति विज्ञायते ।। वही• (02 . 01 .03)
10. दक्षिणतस्तिष्ठन्मन्त्रवान् ब्राह्मण आचार्यायोदकांजलि पूरयेत्।। वही • (02. 04. 10)
11. P. 131, Vedic Inderi, Macdonell and keith, Delhi, 1958
12. तैत्तिरीयारण्यक सायण भाष्य (04. 01. 01)
13. दक्षिणतः उदङ्मुखो मन्त्रकारः ।। वही • (01. 08. 01)
14. तैत्तिरीयारण्यक भट्टभास्कर भाष्य (04. 01. 01)
15. चरकतन्त्र, भट्टार हरिचन्द्र व्याख्या, सूत्रस्थान (01. 07)
16. ब्रह्माण्ड पुराण (02. 32. 70)
17. वही• (02. 32. 96)
18. वही• (02. 32. 97)
19. वही• (02. 32. 98)
20. वही• (20. 32. 99)
21. वही• (02. 32. 100)
22. वही• (02. 32. 101)
23. ब्रह्माण्ड पुराण (02. 32. 102)
24. वही• (12. 03)
25. निरूक्त (13. 12)
26. वही•
27. वही• (10. 10)
28. वही • (04. 06. 62)
29. निरूक्त (02. 02. 62)
30. उवट यजुर्वेद भाष्य (07. 46)
31. बौधायन धर्मसूत्र व्याख्या (020. 06. 36)
32. मनुस्मृतिः मेधातिथि भाष्य (01. 01)
33. ब्रह्माण्ड पुराण (02. 32. 67)